जब मशाल बुझ जाती है: भारत में दूरदर्शी नेतृत्व का मौन अवनयन

श्री सुरेश प्रभु
ऋषिहुड विश्वविद्यालय के कुलपति
पूर्व केंद्रीय मंत्री, वाणिज्य एवं उद्योग, रेलवे

भारतीय लोकतंत्र की पवित्र लय में, राजनीति कभी भी महत्वाकांक्षा की प्रतियोगिता नहीं रही-यह सेवा का एक अनुबंध रही है। ग्रामीण और शहरी भारत की धूल भरी गलियों से लेकर दिल्ली के चहल-पहल भरे गलियारों तक, हमारे गणतंत्र की आत्मा हमेशा ऐसे नेताओं द्वारा पोषित रही है जिन्होंने शासन को शक्ति के रूप में नहीं, बल्कि प्रार्थना के रूप में देखा।

फिर भी, आज, राष्ट्र की अंतरात्मा में एक मौन चिंता उभर रही है कि क्या होगा जब दूरदर्शी और स्वैच्छिक नेता, जो विनम्रता, बुद्धिमत्ता और करुणा के साथ सेवा करते हैं, राजनीति से स्वयं को दूर करने लगेंगे? उनकी अनुपस्थिति केवल एक राजनीतिक बदलाव नहीं है। यह एक राष्ट्र की हानि है। यह उस प्रकाश का लुप्त होना है जिसने कभी निर्दोषों, गरीबों और बेजुबानों का मार्गदर्शन किया था।

गरिमा के सौम्य निर्माता

भारत की प्रगति कभी भी केवल नीतियों पर आधारित नहीं रही है, यह सहानुभूति पर आधारित रही है। आइए उन लोगों को याद करें जिनकी शांत क्रांतियाँ आज भी लाखों लोगों के जीवन में व्याप्त हैं:

❖**के. कामराज (1954-1963)**: वह भोजन जिसने एक पीढ़ी को तृप्त किया
तमिलनाडु के मुख्यमंत्री के रूप में, कामराज ने देखा कि भूख बच्चों को स्कूल जाने से रोक रही है। इसके जवाब में, उन्होंने 1956 में मध्याह्न भोजन योजना आरम्भ की, जिसके अन्तर्गत हर बच्चे को दिन में एक बार गर्म भोजन दिया जाता था। यह मात्र भोजन नहीं था-यह सम्मान, शिक्षा और भविष्य था। आज, यह दूरदर्शी नीति पूरे भारत में 10 करोड़ से

अधिक बच्चों का पोषण कर रही है।

❖**रामकृष्ण हेगड़े (1983-1988)**: समानता की वर्दी
कर्नाटक के मुख्यमंत्री के रूप में अपने कार्यकाल में, हेगड़े ने देखा कि गरीब बच्चे फटे या बेमेल कपड़ों में स्कूल जाते हैं। 1983 में, उन्होंने सभी सरकारी स्कूलों के छात्रों के लिए मुफ्त स्कूल यूनिफॉर्म का आरम्भ किया, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि कोई भी बच्चा गरीबी के कारण स्वयं को कमतर न समझे। उनके इस कदम ने आत्म-सम्मान और समावेशिता को एक धागे में पिरोया।

❖**वर्गीस कुरियन (1965-1998)**: सामूहिक शक्ति का दूध
भारत की श्वेत क्रांति के जनक के रूप में, कुरियन ने देश को दूध की कमी वाले देश से दुनिया के सबसे बड़े उत्पादक देश में बदल दिया। अमूल सहकारी मॉडल के माध्यम से, उन्होंने ग्रामीण महिलाओं और किसानों को सशक्त बनाया और यह सिद्ध किया कि दूरदर्शी सेवा उदर और आत्मा दोनों को पोषित कर सकती है। 1965 से एनडीडीबी (राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड) का उनका नेतृत्व नैतिक ग्रामीण विकास में एक मानक बना हुआ है।

❖**डॉ. एम.एस. स्वामीनाथन (1960-2020)**: वैज्ञानिक करुणा के बीज
भारत की हरित क्रांति के जनक, स्वामीनाथन ने उच्च उपज देने वाली फसल प्रजातियों और टिकाऊ कृषि पद्धतियों का आरम्भ किया, जिससे 1960 के दशक में भारत को अकाल से बचाया गया। उनके बाद के कार्यों ने जलवायु-अनुकूल कृषि, किसान अधिकारों और ग्रामीण पोषण पर ध्यान केंद्रित किया, और सदैव किसान की गरिमा को केंद्र में रखा। 2023 में उनके निधन ने नैतिक कृषि नेतृत्व के एक युग का अंत कर दिया।

वर्तमान दूरदर्शी लोग शांत सेवा का चयन कर रहे हैं।

हाल के वर्षों में, भारत के कुछ सबसे योग्य और दयालु नेताओं ने चुनावी राजनीति से दूर रहने का निर्णय किया है-उदासीनता के कारण नहीं, बल्कि शांत, अधिक रचनात्मक तरीकों से सेवा करने की एक विचारशील इच्छा के कारण। उनका यह निर्णय सार्वजनिक जीवन की बढ़ती हुई लेन-देन वाली प्रकृति के प्रति गहरी बेचैनी और अपनी ईमानदारी की रक्षा करने की लालसा को दर्शाता है।

❖**सुरेश प्रभु**: बिना किसी मेगाफोन के सुधारक
प्रशिक्षण से चार्टर्ड अकाउंटेंट, प्रभु ने 1998 से 2019 के बीच बिजली, पर्यावरण, रेलवे और वाणिज्य सहित दस केंद्रीय मंत्रिमंडल विभागों का कार्यभार संभाला। उनके कार्यकाल की विशेषता रही:

- 2003 का विद्युत अधिनियम, जिसने पारदर्शिता और प्रतिस्पर्धा के साथ भारत के बिजली क्षेत्र को बदल दिया।

- रेलवे आधुनिकीकरण, जिसमें सुरक्षा, यात्री सुविधाओं और डिजिटल नवाचार पर जोर दिया गया।

- पर्यावरण सुधार, जिसमें जैविक विविधता अधिनियम और बाँस संसाधन विकास सम्मिलित हैं।

अपनी स्वच्छ छवि और नीतिगत कुशाग्रता के लिए व्यापक रूप से सम्मानित होने के बाद भी, प्रभु धीरे-धीरे चुनावी राजनीति से दूर हो गए और शिक्षा, कूटनीति और सलाहकार भूमिकाओं के माध्यम से योगदान देना चुना।

❖ **डॉ. जयप्रकाश नारायणः** एक आदर्शवादी जिन्होंने ईमानदारी को चुना

एक पूर्व आईएएस अधिकारी और लोक सत्ता पार्टी के संस्थापक, नारायण ने नैतिकता और नागरिक सशक्तिकरण पर आधारित राजनीति की कल्पना की थी। उनके योगदानों में सम्मिलित हैं:

- सूचना के अधिकार अधिनियम की वकालत, नागरिकों को पारदर्शिता की मांग करने के लिए सशक्त बनाना।
- चुनावी सुधार के लिए अभियान, आंतरिक पार्टी लोकतंत्र और स्वच्छ उम्मीदवारों के लिए प्रयास।
- जमीनी स्तर पर शासन मॉडल का विकास, विशेष रूप से आंध्र प्रदेश में।

मुख्यधारा की राजनीति की लेन-देन वाली प्रकृति से निराश होकर, उन्होंने चुनावों से दूरी बना लीकृलेकिन अटूट आदर्शवाद के साथ युवा और नागरिक समाज आंदोलनों का मार्गदर्शन करना जारी रखा।

दूरदर्शी लोग पीछे क्यों हटते हैं?

- ध्रुवीकरण और विषाक्तताः राजनीति विचारों का नहीं, बल्कि अहंकार का युद्धक्षेत्र बन गई है।
- नैतिक समझौताः व्यवस्थाएँ प्रायः ईमानदारी की बजाय वफादारी को महत्व देती हैं।
- मीडिया का विकृतीकरणः शांत सेवा सनसनीखेजता में डूब जाती है।
- विवेक की थकानः आदर्शवादियों को किनारे कर दिया जाता है, उन पर ठप्पा लगा दिया जाता है या उन्हें चुप करा दिया जाता है।

लेकिन जब वे चले जाते हैं, तो सबसे गरीब अपनी आवाज खो देते हैं। युवा अपने मार्गदर्शक खो देते हैं। राष्ट्र अपनी आत्मा खो देता है।

विवेक का आह्वान

भारत को ऐसा स्थान नहीं बनना चाहिए जहाँ दूरदर्शी लोग खुद को अप्रिय महसूस करें:

- केवल जोरदार नारों का नहीं, बल्कि शांत सेवा का उत्सव मनाना चाहिए।
- कवियों से लेकर वैज्ञानिकों तक, आध्यात्मिक नेताओं से लेकर सामाजिक कार्यकर्ताओं तक, विचारकों, चिकित्सकों और सुधारकों के लिए अपने दरवाजे खोलने चाहिए।
- विमर्श में गरिमा की रक्षा करनी चाहिए, राजनीति को अपमान का नहीं, बल्कि विचारों का स्थान बनाना चाहिए।

आइए हम एक ऐसी संस्कृति का निर्माण करें जहाँ बुद्धिमान लोग पीछे न हटें-बल्कि आगे आएँ।

निष्कर्षः एक राष्ट्र की प्रार्थना

हर उस दूरदर्शी व्यक्ति के लिए जिसने कभी सेवा की थी और अब हाशिये से देख रहा हैः आपका कार्य आज भी हमें पोषण देता है, शिक्षित करता है और हमारा उत्थान करता है। किन्तु आपकी अनुपस्थिति अनुभव होती है, हर भूखे बच्चे में, हर शांत सुधार में, हर स्थगित सपने में।

हर नागरिक के लिएः आइए हम राजनीति को फिर से दूरदर्शिता के योग्य बनाएँ।

आइए हम साथ-साथ चलें-झंडों के पीछे नहीं, बल्कि पुनर्स्थापित दूरदर्शिता के प्रकाश में।

- लुकास द्वारा लिखित